आर्य ही सत्य हैं

निधि सिंह
बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत-द्वितीय वर्ष, रामजस महाविद्यालय।

संसार कहता रहा राम ही दोषी हैं,
पर सीता कहती रही आर्य ही सत्य हैं।
कब कहा था उन्होंने साथ चलू मैं,
वो तो कहते रहें मिथिला की सुकुमारी
राजकुमारी वैदेही न सह सकोगी तुम वन की यातनाएं
पर मैं ही अडिग रही वन जाने को,
प्रेम थे वो मेरे प्रेम मैंने चुना।

संसार कहता रहा राम ही दोषी हैं,
पर सीता कहती रही आर्य ही सत्य हैं।
मैंने ही भेजा था प्रिय को स्वर्ण मृग लाने को,
लक्ष्मण को भी मैंने ही मजबूर किया जाने को,
मैंने ही लांघी थी डेहरी सीमाओं की।

संसार ने जाने राम को क्या-क्या कहा,
पर सीता कहती रही आर्य ही सत्य हैं।
प्रेम में व्याकुल मेरे प्रिय ने, क्रोध प्रकृति पर किया,
उद्धत हुए प्रलय बाण चलाने को
प्रेम अद्वितीय था उनका मेरे प्रति
सागर को भी लांघ गए प्रिय मुझे पाने को।

संसार ने जाने प्रभु राम को क्या क्या कहा
पर सीता कहती रही आर्य ही सत्य हैं।
प्रेम को उन्होंने अग्नि पर धर दिया
पीढ़ियां ना कहे मुझे कुछ सारे अपयश उन्होंने ले लिये
सह ली सारी यातनाएं पर कर्तव्य सर्वोपरि रखा
त्याग, शील, संकल्प, कर्तव्य जिस तरह जीवित रखा।

संसार ने जाने राम को क्या-क्या कहा,
पर सीता कहती रही आर्य ही सत्य हैं।